

Chapter: 1 to 9

विभाग १ - गद्य

कृति. (अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।  
१

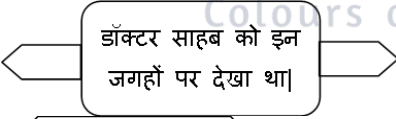
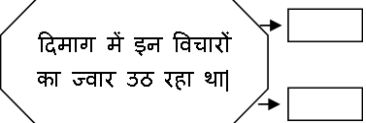
(8)

सुबह का समय था। मैं डॉक्टर राजकुमार वर्मा जी के प्रयाग स्टेशन स्थित निवास “मधुबन” की ओर पूरी रफ्तार से चला जा रहा था क्योंकि 10 बजे उनसे मिलने का समय तय था।  
वैसे तो मैंने डॉक्टर साहब को विभिन्न उत्सवों, संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में देखा था, परंतु इतने निकट से मुलाकात करने का यह मेरा पहला अवसर था। मेरे दिमाग में विभिन्न विचारों का ज्वार उठ रहा था- कैसे होंगे डॉक्टर साहब, कैसा व्यवहार होगा उस साहित्य मनीषी का, आदि। इन तमाम उठते और बैठते विचारों को लिए मैंने उनके निवास स्थान ‘मधुबन’ में प्रवेश किया। काफी साहस करके दरवाजे पर लगी घंटी बजाई। नौकर निकला और पूछा बैठा, “क्या आप अनुराग जी हैं?” मैंने उत्तर में सिर्फ ‘हाँ’ कहा। उसने मुझे ड्राइंग रूम में बिठाया और यह कहते हुए चला गया कि “डॉक्टर साहब आ रहे हैं।” इतने में डॉक्टर साहब आ गए। “अनुराग जी, कैसे आना हुआ?” आते ही उन्होंने पूछा।  
मैंने कहा, “डॉक्टर साहब, कुछ प्रसंग जो आपके जीवन से संबंधित हैं और उनसे आपको जो महत्वपूर्ण प्रेरणाएँ मिली हों उन्हीं की जानकारी हेतु आया था।”  
डॉक्टर साहब ने बड़ी सरलता से कहा, ‘अच्छा, तो फिर पूछिए।’

1 A1) ..

2

अनुच्छेद पढ़कर दी गई कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

- i. 
- ii. 

A2) ..

2

निम्नलिखित वाक्य सत्य या असत्य हैं पहचानकर लिखिए।

- संध्या का समय था।
- 10 बजे उनसे मिलने का समय था।
- उन्होंने मुझे ड्राइंग रूम में बिठाया।
- उनके निवास स्थान ‘वर्षा’ में प्रवेश किया।

A3) ..

2

समानार्थी शब्द अनुच्छेद से ढूँढ़कर लिखिए।

- तालीम - .....
- समय - .....
- अवसर - .....
- उत्सव - .....

A4) ..

2

स्वमत।

'उत्तम साहित्य के लिए संगोष्ठी और सम्मेलन आवश्यक हैं' विषय पर २५ से ३० शब्दों में अपने विचार लिखिए।

(ब) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

(8)

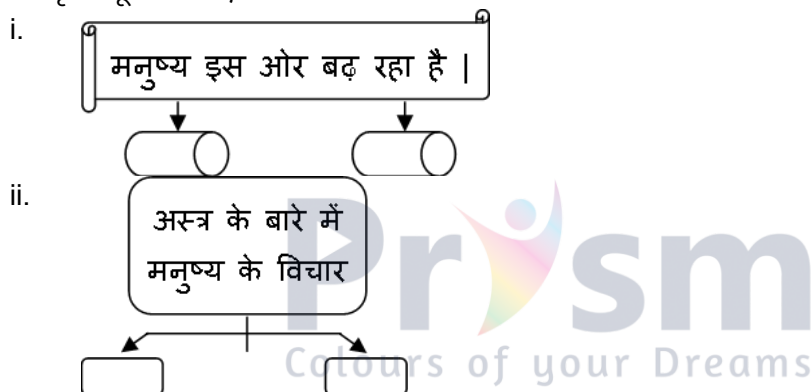
अगर आदमी अपने शरीर की, मन की और वाक की अनायास घटने वाली वृत्तियों के विषय में विचार करे तो उसे अपनी वास्तविक प्रवृत्ति पहचानने में बहुत सहायता मिले। मनुष्य की नख बढ़ा लेने की जो सहजात वृत्ति है, वह उसके पशुत्व का प्रमाण है। उन्हें काटने की जो प्रवृत्ति है, वह उसकी मनुष्यता की निशानी है।

मेरा मन पूछता है – मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है ? पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर ? अस्त्र बढ़ाने की ओर या अस्त्र काटने की ओर ? मेरी निर्बोध बालिका ने मानो मनुष्य जाति से ही प्रश्न किया है – जानते हो, नाखून क्यों बढ़ते हैं ? यह हमारी पशुता के अवशेष हैं। मैं भी पूछता हूँ – जानते हो, ये अस्त्र-शस्त्र क्यों बढ़ रहे हैं ? ये हमारी पशुता की निशानी हैं। स्वराज होने के बाद स्वभावतः ही हमारे नेता और विचारशील नागरिक सोचने लगे हैं कि इस देश को सच्चे अर्थ में सुखी कैसे बनाया जाए। हमारी परंपरा महिमामयी और संस्कार उज्ज्वल हैं क्योंकि अपने आप पर, अपने आप द्वारा लगाया हुआ बंधन हमारी संस्कृति की बहुत बड़ी विशेषता है।

1 A1) ..

2

आकृति पूर्ण कीजिए।



A2) ..

2

निम्नलिखित कथनों को गद्यांश के घटनाक्रम के अनुसार फिर से लिखिए :

- नाखून हमारी पशुता के अवशेष हैं।
- मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है?
- मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है?
- ये अस्त्र-शस्त्र क्यों बढ़ रहे हैं?

A3) ..

2

निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

- निर्बोध
- पशुता
- अर्थ
- सुख।

A4) ..

2

स्वमत।

'सुरक्षा हेतु शास्त्रों की भरमार' इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

(क) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

(4)

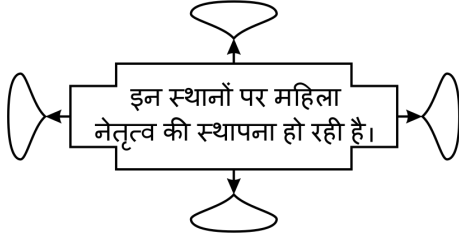
आज संसार महिलाओं की योग्यता को पहचान चुका है। इसी का प्रभाव है जो यूरोप, एशिया, अमरीका, अफ्रीका आदि सभी स्थानों पर महिला नेतृत्व की स्थापना हो रही है। संसार में आज तक कितने ही पुरूषों तानाशाह के रूप में शासन कर जनता से बर्बरतापूर्वक व्यवहार किया है और ऐसे शासकों द्वारा प्रगति के संबंध में भी कोई विशेष प्रयास नहीं किए गए। आज समय महिलाओं के साथ है और संपूर्ण विश्व के वासी अपने घावों पर मरहम लगाने हेतु महिला नेतृत्व को स्वीकार कर रहे हैं। विश्व की सबसे छोटी ईकाई परिवार है और परिवार के सभी सदस्यों के सफल जीवन की सूत्रधार

महिला ही होती है किंतु ऐसा नहीं है कि केवल वह परिवार तक ही सीमित होती है या केवल एक परिवार को ही सफल कर सकती है।

1 A1) ..

2

आकृति पूर्ण कीजिए।



A2) ..

2

स्वमत।

'नारियों के बढ़ते कदम' इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

विभाग २ - पदय

कृति. (अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

(6)

२

जैसा भोजन खाइए, तैसा ही मन होय ।  
जैसा पानी पीजिये, तैसी बानी होय ।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय ।  
औरन को शीतल करे, आपौ शीतल होय ।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय,  
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय ।

मैया, कबहिं बढ़ेगी चोटी ?  
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी ॥  
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों, हवै लाँबी - मोटी ।  
काँचो दूध पियावत पचि - पचि देत न माखन रोटी ।  
सूर स्याम चिरजीवौ दोउ भैया, हरि - हलधर की जोटी ॥

1 A1) ..

2

कविता में इस अर्थ वाले शब्द।

- ठंडा - .....
- कोई - .....
- बलराम - .....
- मक्खन - .....

A2) ..

2

समानार्थी शब्द अनुच्छेद से ढूँढकर लिखिए।

- खोजा - .....
- बानी - .....
- आपा - .....
- पानी - .....

A3) ..

2

स्वमत।

माँ की ममता' इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

विभाग ३ - (व्याकरण)

**कृति.3 सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए -**

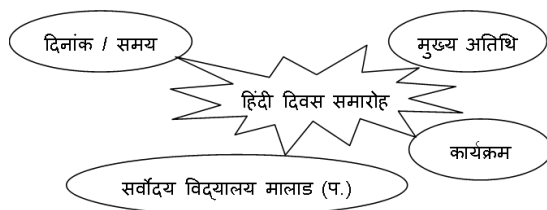
- (1) मुहावरे का अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए (2)
- 2) मैं अंग्रेजी पढ़ने लगा।
- 2) पसीना बहाना - .....
- (2) वाक्य में यथास्थान विरामचिह्नो का प्रयोग कीजिये (1)  
यही देख लीजिए अभी नुक्कड़ की दुकान पर आया हूँ
- (3) वाक्य शुद्ध करके फिर से लिखिए (1)  
हर तीसरा दिन नाखून बढ़ जाते हैं।
- (4) अर्थ के आधार पर निम्न वाक्यों के भेद लिखिए। (1)  
मेरे पास दाने नहीं हैं।
- (5) निम्नलिखित वाक्य का रचना के अनुसार भेद लिखिए (1)  
जो हम में दोष देखते हैं, वे लोभी प्रकृति के लोग हैं।
- (6) निम्न वाक्यों के काल पहचान कर लिखिए (2)  
मैं उससे भी आगे बढ़कर कहूँगा।
- 2) थोड़े दिनों में तुम इसे समझने लगोगी। - .....
- 7) अधोरेखांकित शब्द का भेद लिखिए (1)  
धरती का आँगन महके ।

**विभाग ४ - रचना विभाग**

**कृति.4 अ) निम्नलिखित किसी एक विषय पर लगभग 80 से 100 शब्दों में निबंध लिखिए। (5)**

- 1) चिकित्सा में विज्ञान
- 2) यदि कम्प्यूटर न होते.....
- 3) समय का सदुपयोग

**ब) निम्नलिखित वृत्तांत लिखिए। (5)**



**अथवा**

**निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखिए**

एक कौआ - प्यासा - पानी का मटका - मटके में पानी कम होना - पत्थर के टुकड़े डालना - पानी ऊपर आना - प्यास बुझाना - शिक्षा।

**क) गद्य आकलन (5)**

परिच्छेद के आधार पर पाँच प्रश्न तैयार कीजिए। नफरत मनुष्य के हृदय को जलाने का काम करती है। यह मनुष्य के मन-मस्तिष्क पर हावी हो जाती है। इसके कारण मनुष्य नित दूसरे व्यक्ति से जलता है और दूसरे के प्रति ईर्ष्या द्वेष की भावना रखता है। नफरत से मनुष्य स्वयं के लिये गड़ढा खोदता है। यदि हम किसी से

नफरत करेंगे तो दूसरा भी हम से नफरत करेगा। हमें सभी के साथ स्नेह का अाचरण करना चाहिए इससे भाईचारा और शांति स्थापित होती है। समाज में प्रेमका प्रचार करने से व्यक्ति पूजनीय बन जाता है। उसे प्रेम के बदले प्रेम मिलता है।

